जो कहे खुदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद।
खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद।। २४ ।।

यह मुसलमान खुदा को बेचून, अर्थात् निराकार कहते हैं। ऐसा कहने से मुहम्मद की बात सत न हुई, क्योंकि खुदा और मुहम्मद के बीच परमधाम में जो नब्बे हजार बातें हुई हैं, वह शब्द ही रद्द हो जाते हैं।

गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान।
कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रह्या ईमान।। २५ ।।

दूसरे लोग अज्ञान के कारण पारब्रह्म को भले ही निराकार कहें पर मुसलमान कैसे कह रहे हैं? यह अपने को मुहम्मद के दीन को मानने वाले कहते हैं। इन्हें फिर मुहम्मद पर ईमान कहां रह गया?

खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर।
हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कह्या पैगंमर।। २६ ।।

खुदा एक है और मुहम्मद की बातें सत हैं, यह दूसरे धर्म वाले लोग कैसे मानेंगे? मुहम्मद साहब ने पारब्रह्म के स्वरूप की गवाही दी है, इसलिए पारब्रह्म ने रसूल को पैगम्बर कहा।

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान।
एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान।। २७ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि जो खुदा की गवाही देता है, वह खुद खुदा ही होता है। एक खुदा को छोड़कर दूसरा कोई भी नहीं है, इसलिए मुहम्मद की वाणी सत है।

महामत कहे सुनो मोमिनों, दीन हकीकी हक हजूर।
हक अमरद सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर।। २८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो। हकीकी दीन को मानने वाले ही हक के चरणों में पहुंचते हैं (निजानन्द सम्प्रदाय को मानने वाले ही मूल-मिलावे में उठेंगे)। जो पारब्रह्म का किशोर स्वरूप हैं, ऐसा नहीं मानते, वह हकीकी दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) से दूर हैं।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ४३५ ॥

रूहों की बिने देखियो

जो उमत होवे अर्स की, सो नीके विचारो दिल।
बिने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल।। १ ।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो, वह अच्छी तरह से दिल में विचार कर देखो। पहले अपनी चाल देखो। फिर अपनी जमात को देखकर काम करो।

कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन।
कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन।। २ ।।

पहचान करो अपने धनी कौन हैं? अपना घर कैसा है? वह तन कैसे हैं जो मूल तन (परआतम) है।

तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर।
ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर।। ३ ।।

तुमको जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से पहचान करा दी है जिससे अब तुम सब कुछ जानते हो। तुम्हारी इतनी बड़ी महानता है, अब भूल क्यों जाते हो?

Nijanand App

कैसी बात दिल पैदा करी, जिनसे मांग्या खेल ए।
सो कैसा खेल ए किया, ए देखत हो तुम जे।।४।।

श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे दिल में कैसी इच्छा पैदा कर दी जिससे तुमने खेल मांग लिया? उस खेल को तुम देख रहे हो। देखो यह खेल कैसा है?

दुनियां कैसी पैदा करी, ए जो चौदे तबक।
तिन सबों यों जानिया, किनों न पाया हक।।५।।

यह चौदह लोकों का संसार है। यह कैसे बनाया गया? इस दुनियां में सभी बड़े-बड़े धर्माचार्य, ऋषि, मुनि सब जानते हैं कि परमात्मा किसी को नहीं मिला।

खोज खोज के सब थके, कई कहावें फिरके बुजरक।
पर तिन सारों ने यों कह्या, गई न हमारी सक।।६।।

बड़े-बड़े धर्म-पन्थों के आचार्य भी खोज-खोजकर थक गए। उन सबों ने यही कहा कि पारब्रह्म के बारे में हमारे संशय नहीं गए।

और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत।
सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित।।७।।

इस ब्रह्माण्ड के जो मालिक त्रिदेव हैं, जिनको सब दुनियां पूजती है, वह भी कहते हैं कि हमें पारब्रह्म नहीं मिले, न हम जानते हैं कि वह कहां हैं और कैसे हैं?

हम रूहें भी आइयां इन खेल में, सो गैयां माहें भूल।
सुध ना बिरानी आपनी, भया ऐसा हमारा सूल।।८।।

हम रूहें भी इस खेल में आईं और आकर भूल गईं। हमें अपने और पराए की सुध नहीं रही। ऐसा हमारा हाल हो गया।

इनमें फुरमान ल्याया रसूल, देने अपनी खबर आप।
फुरमान कोई ना खोल सके, जाथें होए हक मिलाप।।९।।

इस दुनियां में रसूल साहब कुरान लेकर पारब्रह्म का संदेश देने के लिए आए। इस कुरान को जिससे हक का मिलन होता है कोई नहीं खोल सका।

फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत।
ए खोल सके न त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत।।१०।।

दूसरा फरमान शुकदेवजी भागवत लाए जिसमें हमारी हकीकत है। इन रहस्यों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी नहीं खोल सके।

कुंजी ल्याए रूहअल्ला, जासों पावें सब फल।
ज्यों कर ताला खोलिए, सो जाने न कोई कल।।११।।

श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर आए जिससे सब धर्मग्रन्थों के रहस्य खुल जाते हैं। उन छिपे रहस्यों को कैसे खोलना है, कोई नहीं जानता।

सो कुंजी साहेब ने, मेरे हाथ दई।
जिन बिध ताला खोलिए, सो सब हकीकत कही।।१२।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुंजी को श्री राजजी महाराज ने मुझे दिया और सब धर्मग्रन्थों के रहस्य किस तरह से खोले जाएं, वह सब हकीकत (युक्ति) मुझे बताई।

Nijanand App

सक परदा कोई न रह्या, सब विध दई समझाए।
कहे खोल दे अर्स रूहों को, ए मिलसी तुझे आए।। १३ ।।

मेरे और धनी के बीच किसी तरह का परदा नहीं रह गया, इसीलिए सब हकीकत मुझे समझा दी और हुकम दिया कि परमधाम की रूहें तुझे आकर मिलेंगी, उनको तुम परमधाम के दरवाजे खोल देना।

अब देखो दिल विचार के, कैसी बुजरक बात है तुम।
कैसा खेल तुम देखिया, कई विध देखाई हुकम।। १४ ।।

अब हे सुन्दरसाथजी! विचार करके देखो यह कितनी बड़ी बात है और तुम्हारी कितनी बड़ी महिमा है। किस तरह से तुमने खेल देखा। धनी ने तुम्हें कैसा खेल दिखाया है?

चीन्हो इन खसम को, चीन्हो बका वतन।
और चीन्हो तुम आपको, देखो फैल करत विध किन।। १५ ।।

तुम अपने धनी को देखो, अपने घर को देखो और अपने आपको पहचानो कि हम कर्म कैसे कर रहे हैं?

फुरमान भेज्या किनने, ल्याए ऊपर किन।
कौन लेके आइया, मांहें क्या खजाना धन।। १६ ।।

कुरान और भागवत से संदेशा किसने भेजा, किसके वास्ते भेजा और कौन लेकर आया और इसमें क्या न्यामत छिपी है।

कौन ल्याया कुंजीय को, है कुंजी में क्या विचार।
किनने ताला खोलिया, खोल्या कौन सा द्वार।। १७ ।।

तारतम ज्ञान की कुंजी कौन लाया है, कुंजी में कौन सी वाणी है, धर्म शास्त्रों के रहस्य किसने खोले, तारतम वाणी के द्वारा कौन सा दरवाजा तुम्हारे लिए खोल दिया है जिससे तुम अपने घर जा सकते हो?

क्या है इन दरबार में, दई कहां की सुध।
सुध बका सारी नीके लेओ, विचारो आतम बुध।। १८ ।।

यह परमधाम कहां है, इस दरबार (मूल-मिलावे) में क्या है, अखण्ड परमधाम की सब हकीकत तुमको मिल जाएगी, यदि आत्मा की जागृत बुद्धि से विचार करके देखो।

ए खेल किनने किया, तुम रूहें भेजी किन।
कुंजी कुलफ गिरो आपको, दिल दे देखो रोसन।। १९ ।।

यह खेल किसने बनाया और रूहों को खेल देखने के वास्ते किसने भेजा? तारतम ज्ञान, धर्मग्रन्थों के रहस्य, ब्रह्मसृष्टि की जमात तथा अपनी परआतम को अच्छी तरह से दिल की आंखों से देखो।

एह विचार किए बिना, जो करत हैं फैल हाल।
जब होसी मिलावा जाहेर, तब तिनका कौन हवाल।। २० ।।

इन सब बातों का विचार किए बिना इस खेल में तुम करनी और रहनी कर रहे हो, अर्थात् जीवों की तरह रह रहे हो तो परमधाम में जब हम इकट्ठे जागेंगे तब तुम्हारी क्या हालत होगी?

फरामोसी तुमें किन दई, अब तुमको कौन जगाए।
इन बातों नींद क्यों रहे, जो होवे अर्स अरवाए।। २१ ।।

अगर तुम मोमिन हो तो देखो तुम्हारे ऊपर फरामोशी का परदा किसने डाला और अब जगा कौन रहा है? इन सब बातों से तुम्हारी अज्ञानता क्यों नहीं हटती?

Nijanand App

मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत।
ए चोट काफरों न लगे, मोमिनों छेद निकसत।। २२ ।।

मोमिन और काफिर दो तरह के लोगों की हकीकत बताई। उनमें यह फर्क है कि मोमिन वाणी से घायल होकर संसार छोड़कर घर जाएंगे और काफिर पर कुछ असर नहीं होगा।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों न विचारो तुम।
कई बिध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे मोमिनो! तुम इस बात का विचार क्यों नहीं करते कि धनी ने तुम्हें आनन्द देने के लिए अनेक तरह से तुम्हें लीला दिखाई है। फिर तुम ऐसे धनी को क्यों भूलते हो?

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ४५८ ॥

नूर नूरतजल्ला की पेहेचान

बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए।
हाए हाए तो भी इस्क न आवत, अरवा अर्स की जे।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की मेहर देखो कि वह तुम्हें अपनी अंगना जानकर बुला रहे हैं। हाय! हाय! तुम अर्श की अंगना कहलाती हो, फिर भी तुम्हें अपने धनी से मिलने की तड़प नहीं आती?

ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नाहीं कोए।
सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए।। २ ।।

यह मेहर मोमिनों के वास्ते हुई है और इसे दूसरा कोई नहीं समझ सकता। दूसरा तो तब समझे जब उसे पारब्रह्म की पहचान हो?

खावंद अर्स अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत।
इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत।। ३ ।।

धाम के धनी की थोड़ी सी हकीकत बताती हूं। इस अखण्ड परमधाम के श्री राजजी महाराज की ब्रह्मसृष्टि अंगना हैं।

बका अव्वल से अबलो, किन किया न जाहेर सुभान।
नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान।। ४ ।।

आज तक उस अखण्ड परमधाम को तथा पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी महाराज को किसी ने जाहिर नहीं किया, इसलिए श्री राजजी महाराज की हकीकत थोड़ी सी बताती हूं।

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास।
ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल के पास।। ५ ।।

बैकुण्ठ से नीचे के चौदह लोकों का जितना बड़ा ब्रह्माण्ड है, ऐसे कई ब्रह्माण्ड एक पल में पैदा करने की शक्ति अक्षर ब्रह्म की कुदरत के पास है।

ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए।
ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के।। ६ ।।

अक्षर ब्रह्म की कुदरत की ऐसी शक्ति है कि एक पल में ऐसे कई ब्रह्माण्ड बनाकर मिटा देते हैं।

Nijanand App